

Print media - veeral agarwal

Data from interviews:-

Analysis on interviews on the basis of social hierarchy. Collection of sentences in different categories. Categories are on the basis that they use to address someone in interviews. Like sir/ma'am, name/first name, aap/aapka, etc.

A sample interview:-

inter

view

8 -

<https://hindi.filmibeat.com/interview/sanjay-mishra-interview-shahrukh-khan-is-doing-what-government-should-do-for-cinema-087160.html>

sir/maam:

ये उस एक्टर की कहानी है, जिसे देख कर लोग कहते हैं कि, 'अरे सर आपको फिल्म देखी है, क्या गज़ब का काम करते हैं, आपका नाम क्या है?' तो ये अपनी पहचान बनाने वाली कहानी है। तो फिलहाल सतुष्ट यही है कि लोग सर बोलने लगे गए हैं।

their name/first name:

"फिल्मों के लिए जो काम सरकार को करना चाहिए, वो शाहरुख खान कर रहे हैं"- संजय मिश्रा

टेलीविजन से लेकर फिल्मों तक, कई अलग अलग तरह के किरदार निभा चुके अभिनेता संजय मिश्रा अपनी आगामी फिल्म 'कामयाब' को अपने दिल के बहुत करीब मानते हैं।

फिल्म के बारे में बात करते हुए संजय मिश्रा ने कहा- "ये उस एक्टर की कहानी है, जिसे देख कर लोग कहते हैं कि, अरे सर आपकी फिल्म देखी है, क्या गज़ब का काम करते हैं, आपका नाम क्या है?" फिल्म 'कामयाब' 6 मार्च 2020 को रिलीज होने वाली है, जिसे शाहरुख खान प्रस्तुत कर रहे हैं।

फिल्म को रिलीज से पहले फिल्मोबीट ने संजय मिश्रा से मुलाकात की, जहां उन्होंने अपनी आगामी फिल्मों के साथ साथ चरित्र अभिनेताओं, हिंदी फिल्म इंडस्ट्री और अवार्ड्स पर खुलकर बातें की।

संजय मिश्रा का मानना है कि फिल्मों के लिए जो काम सरकार को करना चाहिए, वो शाहरुख कर रहे हैं।

आज मैं शाहरुख खान को तारीफ क्यों करता हूँ.. क्योंकि उन्होंने एक कदम लिया है कि वो अच्छे विषय पर बनी छोटी independent फिल्मों को भी प्रस्तुत करेंगे।

लौकिक जो काम सरकार को करना चाहिए, वो शाहरुख खान कर रहे हैं।

एक फिल्म से शाहरुख खान या रेड चिलीज़ के नाम जुड़ जाने से फर्क दिखता है?

शाहरुख का नाम जुड़ने से वो सघषे कम हो गया।

लोग ये नहीं कहेंगे कि फिल्म में सजय मिश्रा हैं और साथ ही अजय देवगन भी हैं।

इसीलिए अब पकज त्रिपाठी, नोना गुप्ता, सजय मिश्रा, सोमा पाहवा जैसे लोग भी सामने आ रहे हैं क्योंकि लोग इनके किरदारों से जुड़ा महसूस करते हैं।

प्राण साहब ने इतने अलग अलग तरह के किरदार किये हैं कि उस वक्त के हीरो भी शायद डर जाते होंगे कि हमने क्यों नहीं किया।

महमूद को ही ले लीजिए, उनके लिए तो सेट पर हीरो तक इंतज़ार करते थे। इस लिस्ट में कई अभिनेता हैं।

अभी अनीस बज़्मी की 'भूल भुलैया 2' की शूटिंग शुरू हुई है, उसमें भी बड़ा दिलचस्प किरदार है।

unki/uski/unhe:

उनकी फिल्में 100, 200 करोड़ कमाती हैं, उन्हें क्या ज़रूरत पड़ी।

नहीं, मैं उन्हें सपोर्ट कर रहा हूँ। वो फिल्म (को कमाई) को ऊपर ले जाते हैं।

mister or mistress followed by their last name:

tum/tu:

aap:

'कामयाब' मतलब ये नहीं कि लाखों लोग आपके साथ फोटो खिंचा रहे हैं और ऑटोग्राफ़ ले रहे हैं।

कामयाब मतलब सतृप्ति। आपको अपनी सतृप्ति।

एक इंटरव्यू में आपने कहा कि 'हमें अवाडे नहीं चाहिए, हमें दशक चाहिए'.. आपको लगता है कि अवार्ड पाने वाली फिल्में दर्शकों तक नहीं पहुँचती ?

आखी देखी, कड़वी हवा जैसी आपको भी कुछ फिल्में हैं, जो दशकों के बड़े वग़े तक नहीं पहुँच पायीं। इसका अफसोस है ?

कई बार बात कही जाती है कि इंडस्ट्री भी एक्टर और कैरेक्टर एक्टर में भेदभाव करती है। आपका अनुभव क्या कहता है?

सच कहूँ तो ये शहर कब आपको 'ऐ भाई' और कब आपको 'सर' बनाता है, ये आपको भी एहसास नहीं हो पाता है।

किसी फ़िल्म को हमी भरने से पहले आप किन बातों का ध्यान रखते हैं ?

आप निदेशक हैं, आप मुझे स्क्रिप्ट सुनाइये।

जब आप मुझे स्क्रिप्ट सुना रहे हैं और यादें मुझे अपने दिमाग में फ़िल्म देखने लग गईं तो मैं समझ जाता हूँ कि फ़िल्म में मुझे क्या करना है।

इतने सालों में हिंदी फ़िल्म इंडस्ट्री में चरित्र अभिनेताओं को वो पहचान मिली है, जिनके वो हकदार रहे हैं? आप इस बारे में क्या सोचते हैं?

आपकी अपनी सभी फ़िल्मों में आपकी फ़ेवरिट कौन सी है?

Analysing sample interview:

As we can see here that frequency of “name” and “aap” is high . This is because interviews are generally formal so , they don't use there informal language . there they talk each other formally even they are good friends .